CAREERINDIA

SET – 1

Series : HRK/1/C

कोड नं.
Code No. **3/1/1**

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **12** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जायेगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा - II
SUMMATIVE ASSESSMENT - II
हिन्दी
HINDI
(पाठ्यक्रम अ)
(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे — *अधिकतम अंक : 90*
Time allowed : 3 hours — *Maximum Marks : 90*

सामान्य निर्देश :

*(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खंड हैं – **क, ख, ग** और **घ** ।*
*(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है ।*
(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

www.careerindia

CAREERINDIA

खंड – क

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 × 5 = 5**

हर कोई कामयाब होना चाहता है । कहा जाता है कि कामयाबी उसे हासिल होती है, जिसमें लक्ष्य प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा होती है । आपकी कामयाबी आपके विचारों व फैसलों का परिणाम होती है । इस बारे में अनेक विशेषज्ञ यह मानते हैं कि वचनबद्धता में जोड़ने वाली शक्ति होती है । वचनबद्धता आपके दिमाग में लक्ष्य के प्रति दबाव, अनुभव, अनुराग व उत्साह पैदा करती है । यह ताकत आपको कामयाबी की ओर कदम बढ़ाने को प्रेरित करती है । दरअसल, लक्ष्य के प्रति वचनबद्धता आपको एक लक्ष्य के लिए काम करने को बाध्य करती है । यह आंतरिक शक्ति है, जो व्यक्ति के अंतर्मन से उत्पन्न होती है । वास्तव में यह एक बंधन है । मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि वचनबद्धता मनोवैज्ञानिक स्थिति है, जो लक्ष्य के प्रति आपकी दृढ़ता तय करती है और आपको लगातार लक्ष्य की ओर बाँधे रखती है । यह बंधन आपका अपने करियर, सरकार, नौकरी, टीम या किसी भी काम या रुझान के प्रति हो सकता है । यह अदृश्य दबाव है, जो मानसिक तौर पर आप महसूस करते हैं । यही बंधन आप अपने लक्ष्य के प्रति भी महसूस करते हैं । यह अदृश्य दबाव या ताकत आपको बेहतर प्रदर्शन के लिए वचनबद्ध करती है । हालांकि, इस दबाव का स्तर अलग-अलग लोगों में अलग-अलग होता है । यह सच है कि चाहत व दृढ़ विश्वास में काफी अंतर है । जहाँ चाहत की दिशा बदल सकती है, वहीं दृढ़ विश्वास अपनी निर्धारित दिशा में कायम रहता है । किसी इंसान के जीवन की गुणवत्ता उसके बेहतर काम करने की वचनबद्धता पर निर्भर करती है, फिर चाहे उसका कार्यक्षेत्र कुछ भी क्यों न हो ।

(i) सफलता उसे मिलती है :
- (क) जो सफल होना चाहता हो ।
- (ख) जो शक्तिशाली हो ।
- (ग) जिसमें पाने की दृढ़ इच्छा हो ।
- (घ) जिस पर ईश्वर की कृपा हो ।

(ii) सफलता को किसका परिणाम माना गया है ?
- (क) लक्ष्य और परिणाम का
- (ख) भाग्य और फैसले का
- (ग) इच्छा और लगन का
- (घ) विचारों और निर्णयों का

www.careerindia.com

CAREERINDIA

(iii) सफलता की ओर कदम बढ़ाने को कौन प्रेरित करता है ?

(क) दबाव

(ख) अनुराग

(ग) उत्साह

(घ) वचनबद्धता

(iv) "आंतरिक शक्ति" से तात्पर्य है –

(क) अन्तर्मन में उत्पन्न होने वाली शक्ति

(ख) भीतरी दबाव से मिली शक्ति

(ग) परिवार के समर्थन से मिली शक्ति

(घ) मन को पहचानने वाली शक्ति

(v) 'करियर' शब्द है –

(क) तत्सम

(ख) तद्भव

(ग) देशज

(घ) आगत

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 × 5 = 5**

बुराई या खराबी शब्द से हम प्रायः बिदकते हैं । कुछ लोगों में बुराई आ जाती है । क्या कभी सोचा कि इस बुराई का स्रोत कहाँ है ? इसका पता हमें लगाना चाहिए और वहीं से उसे ठीक करने का प्रयत्न करना चाहिए । स्रोत वहीं हो सकता है, जहाँ से हमारा जीवन प्रारंभ होता है और वह है हमारा घर । तो क्या हमारा घर बुराइयों का घर होता है ! अवश्य ही आप लोगों में से किसी को अपने घर से असंतोष होगा । असंतोष इसी कारण हो सकता है कि अपने घर में कुछ दोष आप पाते हैं परंतु दोष की कुछ जिम्मेदारी आपके ऊपर भी तो है । ऐसी स्थिति में आपका कर्त्तव्य है कि आप इन दोषों को दूर करने का यत्न करें । घर में सबके भावों का आदर करते हुए आपको ऐसा प्रयास करना होगा कि आपके कारण किसी दूसरे को कष्ट न हो । इससे घर की शांति और सौहार्द में वृद्धि होगी । आजकल की सबसे विचित्र बात यह है कि कोई अपने को दोष नहीं देता और सभी दूसरे को दोष देते हैं । आज के संसार में आपकी बड़ी जिम्मेदारी है । आगे का भारत वैसा ही होगा जैसा आप लोग अपने जीवन से उसे बनाएँगे । यदि आप अपना काम ठीक तरह से करते हैं तो आप सब देशभक्त हैं और यदि अपने काम के प्रति उदासीन हैं तो आप क्या हैं, यह आप ही सोचिए । मुझे वह शब्द नहीं कहना !

www.careerindia.com

CAREERINDIA

(i) व्यक्ति के जीवन का आरंभ होता है –

(क) विद्यालय से

(ख) मित्रों से

(ग) घर से

(घ) सत्संगति से

(ii) दोषों को दूर करने का उपाय है –

(क) घर वालों को प्यार से समझाना ।

(ख) अपने दोषों को दूर करना ।

(ग) विद्वानों की संगत में बैठना ।

(घ) माता–पिता की आज्ञा का पालन करना ।

(iii) घर–परिवार में शांति तभी होगी जब आप –

(क) सबकी भावनाओं का सम्मान करेंगे ।

(ख) सब पर कड़ा अनुशासन रखेंगे ।

(ग) सबको समझा–बुझा कर रखेंगे ।

(घ) सबसे प्रेमभाव से निपटेंगे ।

(iv) लेखक का देशभक्ति से तात्पर्य है –

(क) सेना में भर्ती होना ।

(ख) अपने कर्त्तव्य का ठीक से निर्वाह करना ।

(ग) आतंकवाद के खिलाफ मोर्चा खोलना ।

(घ) सामाजिक कार्यों में रुचि लेना ।

(v) 'मुझे वह शब्द नहीं कहना' लेखक किस शब्द की बात कर रहे हैं ?

(क) बुराई

(ख) असंतोषी

(ग) देशद्रोही

(घ) देशाभिमानी

www.careerindia.com

CAREERINDIA

3. निम्नलिखित कविता को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 × 5 = 5**

तुम्हीं हो बहकते हुओं का इशारा,
तुम्हीं हो सिसकते हुओं का सहारा,
तुम्हीं हो दुखी दिलजलों का 'हमारा',
भटकती भूलों का है धुर का तारा,
जरा सीखचों में 'समा' सा दिखा जा,
मैं सुध खो चुकूं, उससे कुछ पहले आ जा ।

गुणों की पहुँच के
डबाडब कुओं में,
मैं डूबा हुआ हूँ,
जुड़ी बाजुओं में,
जरा तैरता हूँ, तो
डूबों हुओं में,
अरे डूबने दे
मुझे आँसुओं में !

रे नक्काश, कर लेने दे
अपने जी की,
मिटाऊं, ला तसवीर
मैं आइने की !
पत्थर के फर्श, कगारों में
सीखों की कठिन कतारों में
खंभों, लोहे के द्वारों में
इन तारों में दीवारों में

कुंडी, ताले, संतरियों में
इन पहरों की हुंकारों में
गाली की इन बौछारों में
इन वज्र बरसती मारों में

इन सुर शरमीले, गुण गरवीले
कष्ट सहीले वीरों में
जिस ओर लखूं तुम ही तुम हो
प्यारे इन विविध शरीरों में

www.careerindia.com

(i) 'तुम्हीं' से तात्पर्य है –

(क) सहयोगी मित्र

(ख) विश्वसनीय साथी

(ग) शक्तिमान ईश्वर

(घ) सजग शासन

(ii) कवि ईश्वर से कब मिलने को कहता है ?

(क) जब भक्तिभाव हो ।

(ख) जब ईश्वर का मन करे ।

(ग) भक्त के मरने से पहले

(घ) काम बिगड़ने से पूर्व

(iii) आईने से तसवीर मिटाने से कवि का क्या आशय है ?

(क) आँसुओं में डूबना

(ख) व्यर्थ भटकना

(ग) पहले से बनी अपनी छवि को हटाना

(घ) सब कुछ नष्ट कर देना

(iv) निम्नलिखित में कौन सी विशेषता वीरों में नहीं पाई जाती ?

(क) अपनी प्रशंसा से शर्म–संकोच

(ख) अपने गुणों पर गर्व

(ग) गालियों की बौछार करने का स्वभाव

(घ) कष्ट सहन की आदत

(v) "नक्काश" का अर्थ है –

(क) नक्शे बनाने वाला

(ख) नकल करने वाला

(ग) नकली वस्तुएँ नष्ट करने वाला

(घ) आकृतियाँ उकेरने वाला

CAREERINDIA

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 × 5 = 5**

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ –
जब तुम
मुझे पैरों से रौंदते हो
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं –
धन–धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ ।
जब तुम
मुझे हाथों से स्पर्श करते हो
तथा चाक पर चढ़ाकर घुमाने लगते हो
तब मैं –
कुंभ और कलश बनकर
जल लाती तुम्हारी अंतरंग प्रिया हो जाती हूँ ।
जब तुम मेले में मेरे खिलौने रूप पर
आकर्षित होकर मचलने लगते हो
तब मैं –
तुम्हारे शिशु–हाथों में पहुँच प्रजारूपा हो जाती हूँ ।

पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ–पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं –
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ
(प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्या हो जाती हूँ)
विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है, कि –
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका ।

www.careerindia.com

(i) मिट्टी कौन-सा रूप ग्रहण नहीं कर पाती ?

(क) मातृ रूप

(ख) अंतरंग प्रिया रूप

(ग) प्रजा रूप

(घ) भगिनी रूप

(ii) "मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ", अर्थात्

(क) विनम्र हूँ

(ख) सताई हुई हूँ

(ग) तुच्छ हूँ

(घ) साधनहीन हूँ

(iii) कविता में पुरुषार्थ का क्या आशय है ?

(क) धन

(ख) बल

(ग) उद्यम

(घ) जीवन

(iv) मिट्टी का धन-धान्य प्रदान करना उसका कौन-सा रूप है ?

(क) मातृ रूप

(ख) प्रिया रूप

(ग) प्रजा रूप

(घ) प्रतिमा रूप

(v) कविता में महत्त्व बताया गया है -

(क) देवत्व का

(ख) मातृ शक्ति का

(ग) पुरुषार्थ का

(घ) चिन्मय रूप का

खंड – ख

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : **1 × 3 = 3**

(क) माँ ने कहा, तुम भी चले जाओ । (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

(ख) सोहन के आने पर सब प्रसन्न हो गए । (संयुक्त वाक्य बनाइए)

(ग) जब मैं घर पहुँचा, भाई साहब चले गए थे । (सरल वाक्य बनाइए)

CAREERINDIA
www.careerindia.com

CAREERINDIA

6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : **1 × 4 = 4**

(क) लकड़ियाँ आग में डाली गई। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

(ख) क्या तुम पेड़ पर चढ़ सकते हो ? (भाववाच्य में बदलिए)

(ग) तुम अखबार पढ़ सकते हो ? (कर्मवाच्य में बदलिए)

(घ) अब खाना खा लिया जाए (वाच्य भेद लिखिए)

7. रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : **1 × 4 = 4**

तुम, सुरेश के बड़े भाई को गर्म खाना खिलाओ।

8. (क) स्थायीभाव किसे कहते हैं ? **1 × 4 = 4**

(ख) शृंगार रस का स्थायीभाव क्या है ?

(ग) हास्य रस का एक उदाहरण लिखिए।

(घ) निम्नलिखित काव्यांश में किस रस की निष्पत्ति हुई है ?

"साहस हो खोलो सीकड़ों को, तलवार दो।
सामने खड़े हो देखो क्षण भर में ।।"

खंड – ग

9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **2 + 2 + 1 = 5**

काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं, उसी तरह मुहर्रम-ताज़िया और होली-अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ़ काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज़ सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दोनों कौमों को एक होने व आपस में भाई-चारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

(क) गंगा-जमुनी संस्कृति का क्या आशय है ? कैसे कह सकते हैं कि काशी में गंगा-जमुनी संस्कृति रही है ?

(ख) काशी का अनुपम हीरा किसे कहा गया है और क्यों ?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए – 'काशी में मरण भी मंगल माना गया है।'

www.careerindia.com

CAREERINDIA

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : **2 × 5 = 10**

(क) मन्नू भंडारी ने 'पड़ोस कल्चर' की बात कही है। पड़ोस कल्चर की दो विशेषताएँ लिखिए।

(ख) 'पुराने ज़माने में भी स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी थीं' पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि दो उदाहरणों से कीजिए।

(ग) 'दादा की मीठी शहनाई उनके हाथ लग चुकी थी' कथन का क्या आशय है ? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

(घ) कॉलेज की प्राचार्या मन्नू भंडारी से क्यों घबराती थी ?

(ङ) द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के संबंध में जो तर्क दिए है उनमें से किन्हीं दो तर्कों का उल्लेख कीजिए।

11. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : **1 + 2 + 2 = 5**

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
    आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
    जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा, लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(क) पद्यांश के आधार पर बताइए कि माँ ने लड़की को क्या-क्या सीखें दी हैं ?

(ख) माँ ने यह क्यों कहा कि आग जलने के लिए नहीं है ?

(ग) 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' कथन से क्या अभिप्राय है ?

www.careerindia.com

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : **2 × 5 = 10**

(क) 'राम-परशुराम-लक्ष्मण : संवाद' पाठ के आधार पर बताइए कि सभा ने किस बात को अनुचित कहा और क्यों ?

(ख) 'छाया मत छूना' कविता में 'छाया' का क्या आशय है ? कवि ने उसे छूने से मना क्यों किया है ?

CAREERINDIA

(ग) संगतकार की हिचक क्या उसकी कमज़ोरी है ? कैसे ?

(घ) अपने जीवन के उन लम्हों का उल्लेख कीजिए जब संगतकार की तरह आपके साथी ने आपको संभाला हो ।

(ङ) परशुराम की क्रोधाग्नि को देखकर विश्वामित्र मन ही मन क्या सोच रहे थे ? काव्यांश के आधार पर लिखिए ।

13. 'साना-साना हाथ जोडि' पाठ में प्रदूषण के कारण हिमपात में कमी का वर्णन किया गया है । प्रदूषण के अन्य कौन-कौन से दुष्परिणाम हो सकते हैं ? जीवनमूल्यों की दृष्टि से स्पष्ट कीजिए । **5**

खंड – घ

14. मार्ग अवरुद्ध हो जाने के कारण आप परीक्षा देने कुछ विलंब से पहुँचे और प्रश्नपत्र पर ध्यान स्थिर नहीं कर पाए । इस मनोदशा का वर्णन करते हुए, अपने मित्र को पत्र लिखिए । **5**

अथवा

अपने गाँव में पेड़-पौधों की अवैध कटाई को रुकवाने के लिए जिलाधिकारी को पत्र लिखिए ।

15. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर लगभग **250** शब्दों में निबंध लिखिए । **10**

(क) <u>प्रदूषण की समस्या</u>

- प्रदूषण का अर्थ
- प्रदूषण के कारण
- परिणाम

(ख) <u>प्रातःकालीन भ्रमण</u>

- भ्रमण क्या है ?
- सुबह का वातावरण
- भ्रमण क्यों जरूरी है

(ग) <u>टेलीविज़न</u>

- परिचय
- लाभ-हानि
- जीवन में महत्त्व

www.careerindia.com

16. नीचे लिखे गद्यांश का सार लगभग **एक-तिहाई** शब्दों में लिखिए : **5**

संघर्ष का दूसरा नाम है – जीवन । ये एक प्रकार से पर्यायवाची हैं और एक-दूसरे के पूरक भी । जीना तो उसी का है, जिसने जीवन के सूत्र को समझ लिया, भयंकर से भयंकर और विपरीत स्थिति पर विजय पाने का एक ही रास्ता है – पूरे आत्मविश्वास के साथ बाधा-विरोधों से जूझ जाना, संघर्ष करना; जो संघर्ष से बचकर चले, वह कायर है । संसार रूपी सागर की ऊँची-उफनती लहरों को जिसने चुनौती देना सीख लिया है, सफलता की अनुपम-मणियाँ उसी ने बटोरी हैं । जो डर कर किनारे बैठ गया, वह तो जीवन का दाँव ही हार गया । कबीर ने इसी भाव को इस तरह कहा है – 'जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।' यह 'गहरे पानी' पैठकर खोजना क्या है ? यही संघर्ष अथवा चुनौती को स्वीकारना है, कर्म की आँच में तपना है । यही 'गीता' का भी अमर संदेश है कि 'कर्म करना ही मनुष्य का अधिकार है और धर्म भी' । जीवन-पथ पर चाहे सफलता मिले या विफलता, संघर्ष करने का संकल्प शिथिल नहीं पड़ना चाहिए ।

www.careerindia.com